श्री सनातन जैन धर्म, श्रीमद् राजचंद्र आश्रम, अगास

संक्षिप्त परिचय

परम ज्ञानावतार परमकृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्रजीके परम आज्ञानुवर्ती श्री लघुराज स्वामीके (प्रभुश्रीजीके) निमित्तसे इस आश्रमकी स्थापना वि. सं. १९७६ में हुई । मुनिश्री लघुराजस्वामीकी छत्रछायामें इस आश्रमकी उत्पत्ति हुई, अतः भक्तजनोने प्रारंभमें इसका नाम 'श्री लघुराज आश्रम' रखा, परंतु अपने नाम या स्थापनाकी अंशमात्र भी इच्छा न होनेसे परम निःस्पृह गुरुभक्त महर्षि मुनिश्रीने श्रीमद्के इस स्थूल कीर्तिस्तंभका नाम "श्री सनातन जैन धर्म, श्रीमद् राजचंद्र आश्रम" रखनेकी सूचना की। तदनुसार इस आश्रमका नाम रखा गया। श्री सनातन जैनधर्मकी पुष्टिके लिये ही यह आश्रम है।

इस आश्रममें प्रविष्ट होते ही एक भव्य प्रवेशद्वार दृष्टिगोचर होता है । जिस पर 'क्षमा ही मोक्षका भव्य दरवाजा है' यह बडे अक्षरोंमें उत्कीर्ण है । फिर सामने एक नयनरम्य मंदिर है । जिसमें नीचे श्वेतांबर और ऊपर दिगंबर मंदिर है। उसके भूमिगृहमें 'श्री गुरुमंदिर' में श्रीमद् राजचंद्रजीकी संगमरमरकी शरीरप्रमाण पद्मासन मुद्राकी प्रतिमा बिराजमान है। इस प्रतिमाके एक ओर प्रणवमंत्र 'ॐकार' तथा दूसरी ओर श्रीमद्जीकी पादुकाजीकी स्थापना है।

इस मंदिरकी दाईं ओर एक भव्य सभामंडप है । जिसमें भक्ति, सत्संग, पूजा, सत्श्रवण आदिके लिये सैंकडो मुमुक्षु साथ बैठकर आत्मसाधना करते हैं । इस मंदिरके चौकमें मुख्य प्रवेशद्वारके उपर दूसरी मंजिल पर एक पुस्तकालय है । तीसरी मंजिल पर खुले चौकके मध्यमें सुंदर संगमरमरकी देरीमें श्रीमद्जीकी खडे कायोत्सर्गकी ध्यानमुद्राकी पंचधातुकी प्रतिमा बिराजमान है।

भक्ति संकुलमें मंदिरकी बाईं ओर एक व्याख्यानमंदिर है । जहाँ श्रीमद्जीका पद्मासन मुद्राका भव्य चित्रपट स्थापित किया हुआ है । यहाँ वृद्ध मुमुक्षुओं जो सभामंडपकी सीढियाँ नहीं चढ सकते, वे यहाँ बैठकर भक्ति, सत्संग, पूजा, सत्श्रवण आदि करते हैं । पर्युषण आदि पर्वोंमें मुमुक्षु बहनें यहाँ प्रतिक्रमण करते हैं । इसके ऊपर शांतिस्थान है जहाँ श्रीमद्जीका सुंदर चित्रपट स्थापित है। वहाँसे पूर्वमें आते हुए 'श्री राजमंदिर' आता है, जिसमें श्रीमद्जी, प. पू. लघुराजस्वामी (प्रभुश्रीजी) तथा पू. श्री ब्रह्मचारीजी के सुंदर चित्रपट तथा आज्ञा संबंधी शिलालेख है। वहाँसे पूर्वमें पू. श्री ब्रह्मचारीजीका निवासखंड है । जहाँ उनके दो चित्रपट स्थापित है। वहाँसे पूर्वमें प. पू. प्रभुश्रीजीका निवासखंड है । जहाँ वि.सं. १९९२ की वैशाख सुदी ८ (दि. २८-४-१९३६)को वे समाधिस्थ हुए थे। वहाँ उनकी पाट, गद्दी, लकडी आदि स्मृतिचिह्न तथा उनका चित्रपट दर्शनार्थ रखे हुए है।

मंदिरके चौकके बाहर ईशान दिशाकी ओर प्रभुश्रीजीके अग्निसंस्कार स्थल पर एक देरीमें उनके पादुकाजी स्थापित किये हुए है, उससे आगे पू. श्री ब्रह्मचारीजीके अग्निसंस्कार स्थान पर भी उनकी देरी बनी हुई है, जिसमें उनके पादुकाजी स्थापित किये हुए है ।

संक्षिप्त परिचय

वर्तमान सभामंडपमें श्रीमद्जीका कायोत्सर्ग मुद्राका उनके शरीर प्रमाणका भव्य चित्रपट स्थापित किया हुआ है । वर्तमान सभामंडप पर्व दिनोंमें छोटा पड़नेसे उसके समांतर संगमरमरका १२०'×८०' का एक नूतन सभामंडप निर्मित किया गया है । कुल १७,००० वर्गफूटके इस सभामंडपमें अंदाजन ३,००० मुमुक्षु एक साथ बैठकर भक्ति स्वाध्याय कर सकते हैं। इस नूतन सभामंडपमें श्रीमद्जीका कायोत्सर्ग मुद्राका १३ फूट ऊँचाईका भव्य विशाल चित्रपट स्थापित किया हुआ है ।

परमकृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्रजीने प्रभुश्रीजीसे कहा था-"मुनि, दुषमकाल है इसलिये जडभरत होकर विचरना । रिद्धि, सिद्धि प्रकट होगी, उन्हें लाँघ जाना। इस कालके जीव पके हुए चीभडे (एक फल) जैसे हैं। कठोरता सहन नहीं कर सकेंगे। इसलिये करुणामूर्ति बनोगे तो अनेक जीवोंका आपके द्वारा कल्याण होगा।"

वि. सं. १९७६ से १९९२ तक आश्रममें रहकर प्रभुश्रीजीने एक अनन्य भक्तिक्रम निश्चित करके दिया है । जिसका आराधन लगभग पिछले १०५ बरसोंसे अविरत उनकी आज्ञानुसार आश्रममें चल रहा है । यह आश्रमकी भूमि प्रभुश्रीजीके चरणस्पर्श तथा निवाससे पावन बनी हुई है और आज भी उनकी पवित्र चेतनासे स्पर्शित परमाणुओंका आश्रममें अनुभव होता है । इस पवित्र सत्संगधाम, तीर्थशिरोमणि आश्रमकी यह एक अनन्य विशिष्टता है।

प्रातःकालमें ४-०० बजेसे लेकर रात्रिके ९-३० बजे तक अविरत निम्नानुसार क्रम चलता है:-

प्रातः काल	४-००	से	६-३०	भक्तिके पद, मंत्रस्मरण, आलोचनापाठ, सामायिकपाठ, चैत्यवंदन, स्तवन ।
सबेरे	९-००	से	११-४५	श्री आत्मसिद्धि शास्त्रकी पूजा अथवा अन्य पूजा ।
दोपहर	२-००	से	४-१५	भक्तिके पद तथा वचनामृत आदि वांचन ।
शाम	६-००	से	६-४५	देववंदन तथा ४ जगह पर आरती-मंगलदीवो ।
रात	७-१५	से	९-३०	भक्तिके पद, मंत्रस्मरण, श्री आत्मसिद्धि शास्त्रकी भक्ति तथा उपदेशामृत एवं बोधामृतमें से वांचन ।

(पर्व दिनोंमें तथा ऋतु अनुसार कार्यक्रम तथा समयमें परिवर्तन होता है)

इस आश्रममें मध्यस्थ वातावरण होनेसे श्वेतांबर, दिगंबर, स्थानकवासी, वैष्णव संप्रदायवाले तथा अन्य संप्रदायवाले किंतु आत्माका कल्याण करनेकी भावनावाले जिज्ञासु जीव आते हैं और रहते हैं । इस पवित्र सत्संगधाम, तीर्थशिरोमणि आश्रमकी यह भी एक अनन्य विशिष्टता है ।

पू. श्री ब्रह्मचारीजीका कार्तिक सुदी ७, वि. सं. २०१० (दि. १३-११-१९५३) में देहोत्सर्ग हुए आज कई वर्ष हो गये हैं और उनका कोई उत्तराधिकारी भी नहीं है फिर भी इस आश्रममें ज्ञानीकी आज्ञानुसार भक्ति-सत्संगका निश्चित कार्यक्रम अस्खलितरूपसे चल रहा है । इस आश्रममें आनेवाले और रहनेवाले प्रत्येक मुमुक्षु भाईबहिनके लिये भक्ति स्वाध्यायके क्रममें उपस्थित रहना और भाग लेना अपेक्षित है । यहाँ सभीको मात्र आत्मार्थके लिये, सत्संग, त्याग, भक्ति आदिके लिये रहना है। किसी भी प्रकारके विषयकषाय या प्रमादके लिये आश्रममें रहनेकी मनाई है ।

संक्षिप्त परिचय

वि. सं. १९५४ में प. पू. प्रभुश्रीजी वसो गाँवमें थे तब परमकृपालुदेव वहाँ पधारे थे । उस समय परमकृपालुदेवने प. पू. प्रभुश्रीजीको, जो कोई मुमुक्षुभाई बहिन आत्मार्थ साधन माँगे तो उसे सात व्यसन, सात अभक्ष्य आदिके त्यागपूर्वक नित्य नियमके पाठ तथा "सहजात्मस्वरूप परमगुरु" मंत्र देनेकी आज्ञा की थी । इस प्रकारसे परमकृपालुदेवने वर्तमानकालमें मोक्षमार्गको प्रकट किया और उसे विश्वमें प्रवर्तमान करनेका अधिकार प. पू. प्रभुश्रीजीको दिया । इस अधिकारके अनुसार प. पू. प्रभुश्रीजीने आश्रमके लिये इस आराधना क्रमकी योजना की है ।

इस बारेमें पू. श्री ब्रह्मचारीजी बोधामृत भाग ३, पत्रांक १२१० में लिखते है–

"प. पू. प्रभुश्रीजीने आश्रमके लिये जो कार्यक्रम बनाया है वह बहुत दीर्घदृष्टिपूर्वक निश्चित किया है । उसमें रस न आवे उतनी जीवकी मुमुक्षुताकी कमी है । अपनी कल्पनाके अनुसार प्रवृत्ति की जाये तो उसमें उसे कुछ रस (रुचि) लगता है, किंतु इससे तो स्वच्छंद पुष्ट होता है और वह संसारका कारण है, ऐसा सोचकर ज्ञानीपुरुषके मार्गमें मनको मोडना ही हितकारी है। न माने तो हठपूर्वक भी मनको क्रममें जोडना हितकारी है ।"

"प. पू. प्रभुश्रीजीने अपने देहोत्सर्गके कुछ दिन पूर्व, वि.सं. १९९२ की चैत्र वदी पंचमीके पवित्र दिनको इस आज्ञामार्गकी सुपुर्दगी पू. श्री ब्रह्मचारीजीको की थी । पू. श्री ब्रह्मचारीजीके देहोत्सर्गके बाद, परमकृपालुदेवकी प्रत्यक्ष आज्ञासे कोई वंचित न रहे और आज भी मुमुक्षुजीव उस आज्ञाको मान्य कर सके इस शुभ आशयसे जिस स्थान पर प. पू. प्रभुश्रीजी तथा पू. श्री ब्रह्मचारीजी आज्ञा देते थे, उस 'श्री राजमंदिर' के नामसे प्रसिद्ध धर्मस्थान पर यह नित्यनियमकी आज्ञा और स्मरणमंत्रका परिचय करानेवाले प. पू. प्रभुश्रीजीके उपदेशबोधके साथ एक शिलालेख रखा गया है । इस शिलालेखमें बताये अनुसार आज भी कई सत्साधक "संत (प्रभुश्रीजी) के कहे अनुसार मुझे परमकृपालुदेवकी आज्ञा मान्य है" (उ. पृ. २६९) ऐसी भावनासे, इस स्थानमें कृपालुदेवको प्रत्यक्ष मानकर, उनके चित्रपट समक्ष उनकी प्रत्यक्ष आज्ञाको श्रद्धा-पूर्वक मान्य करके, उसकी आराधना करनेका नियम लेते हैं ।

आश्रममें सात व्यसन, सात अभक्ष्य, कंदमूल, रात्रिभोजनका सर्वथा निषेध है । ब्रह्मचर्य पालन, आश्रममें आने तथा रहनेवालोंके लिये अनिवार्य और आवश्यक है । आश्रमकी यह मूलभूत नींव है ।

इस आश्रमके बारेमें प. पू. प्रभुश्रीजीने ऐसे उद्‌गार निकाले हैं–

"यह आश्रम कैसा है जानते हो ? देवस्थानक है । यहाँ जिसे आना हो उसे लौकिकभाव बाहर, दरवाजेके बाहर छोड़कर आना है । यहाँ आत्माका योगबल प्रवर्तमान है ।" (पृ. २६५)
"इस आश्रममें कृपालुदेवकी आज्ञा प्रवर्तमान है । वे महान अद्‌भुत ज्ञानी है । इस पुण्यभूमिका माहात्म्य अलग ही है । यहाँ रहनेवाले जीव भी पुण्यशाली है ।" (पृ. ४१९)

आश्रममें मुमुक्षुओंके रहने और भोजनकी समुचित व्यवस्था है । पर्व दिनोंमें हजारों मुमुक्षु यहाँ आकर लाभ लेते हैं ।

संक्षिप्त परिचय

यहाँके पुस्तक बिक्री विभागमें आश्रम द्वारा प्रकाशित अंदाजित १३० से ज्यादा पुस्तकोंकी बिक्री होती है। जिसमें श्री परमश्रुत प्रभावक मण्डलके अन्तर्गत श्रीमद् राजचंद्र जैन शास्त्रमालाके नामसे प्रकाशित शास्त्र भी समाविष्ट है । (पुस्तकसूची इसी पुस्तकमें अन्यत्र दी गई है ।)

ओफिस कार्यालयके उपर पहली मंजिल पर प्राचीन जैन साहित्यका नमूनेदार संग्रह स्थान है । जहाँ ५०० से ज्यादा शास्त्रोंका संग्रह है, जिसमें कई शास्त्र हस्तलिखित है । लम्बे समय तक ये शास्त्र सुरक्षित रह सके इस हेतु उन्हें लेमीनेट करके व्यवस्थित रखा गया है ।

इस आश्रमका संचालन वि.सं. १९८०, चैत्र सुद ५ ता. ९-४-१९२४ के दिन प. उ. प. पू. प्रभुश्रीजी द्वारा कि ये गये ट्रस्टडीडके अनुसार तथा उसके बाद गुजरात राज्यके माननीय चेरिटी कमिश्नरश्री द्वारा बनाई हुई 'स्कीम' के आधीन ट्रस्टीमंडल द्वारा हो रहा है ।

सुज्ञ पाठक अच्छी तरहसे समझ गये होंगे कि प. उ. प. पू. प्रभुश्रीजी द्वारा स्थापित इस आश्रममें उनकी आज्ञानुसार श्री सनातन जैनधर्मकी प्रणाली मान्य है । धर्मका यह मुख्य मार्ग यहाँ सतत बहता रहे एतदर्थ आश्रमका ट्रस्टीमंडल तथा अन्य समझदार मुमुक्षुवर्ग सदा जागृतरूपसे प्रयत्नशील हैं । फिर भी मिथ्या श्रद्धावालोंका परिबल चारों ओर दृष्टिगोचर हो रहा है । ऐसी परिस्थितिमें आश्रमकी सत्प्रणालीमें हस्तक्षेप कर उसके मूल ध्येय और आदर्शको हानि पहुँचानेका प्रयत्न करनेवाले ऐसे तत्त्वोंसे सचेत रहनेकी और समय आनेपर उसका प्रतिकार करनेकी हम सबकी पवित्र फर्ज है । आश्रमका अस्तित्व ही जिस पर टिका हुआ है ऐसे इस प्राणप्रश्नकी रक्षाके लिये ट्रस्टीमंडल आप सबका सहयोग चाहता है । जो इस तीर्थभूमिको आत्मकल्याणका एक अनुपम स्थान मानते है, उनकी तरफसे संपूर्ण सहयोग मिलेगा ही-ऐसी यह ट्रस्टीमंडल श्रद्धा रखता है ।

अन्तमें, फिरसे निवेदन हैं कि श्री सनातन जैन वीतरागमार्गकी उपासनाके लिये ही यह आश्रम है। इस मूल ध्येयको सन्मान देकर, भावपूर्वक सहयोग देकर सब मुमुक्षु इस आश्रमका गौरव बढाये ऐसी हमारी नम्र विनंती है ।

–: आश्रमके संपर्कके लिये एड्रेस :–

श्रीमद् राजचंद्र आश्रम,
स्टेशन अगास, वाया : आणंद
पोस्ट : बोरीआ, गुजरात ३८८ १३० (भारत)
टेलीफोन : ७०६९५ ५१००० / ७०६९५ ५२०००
E-mail ID : info@agasashram.org
Website : www.agasashram.com